आज़ादी का अमृत महोत्सव

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

आज़ादी का अमृत महोत्सव
भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष का उत्सव

सेन्ट कान्हेरी

मुम्बई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की ई-पत्रिका

सितम्बर – 2021

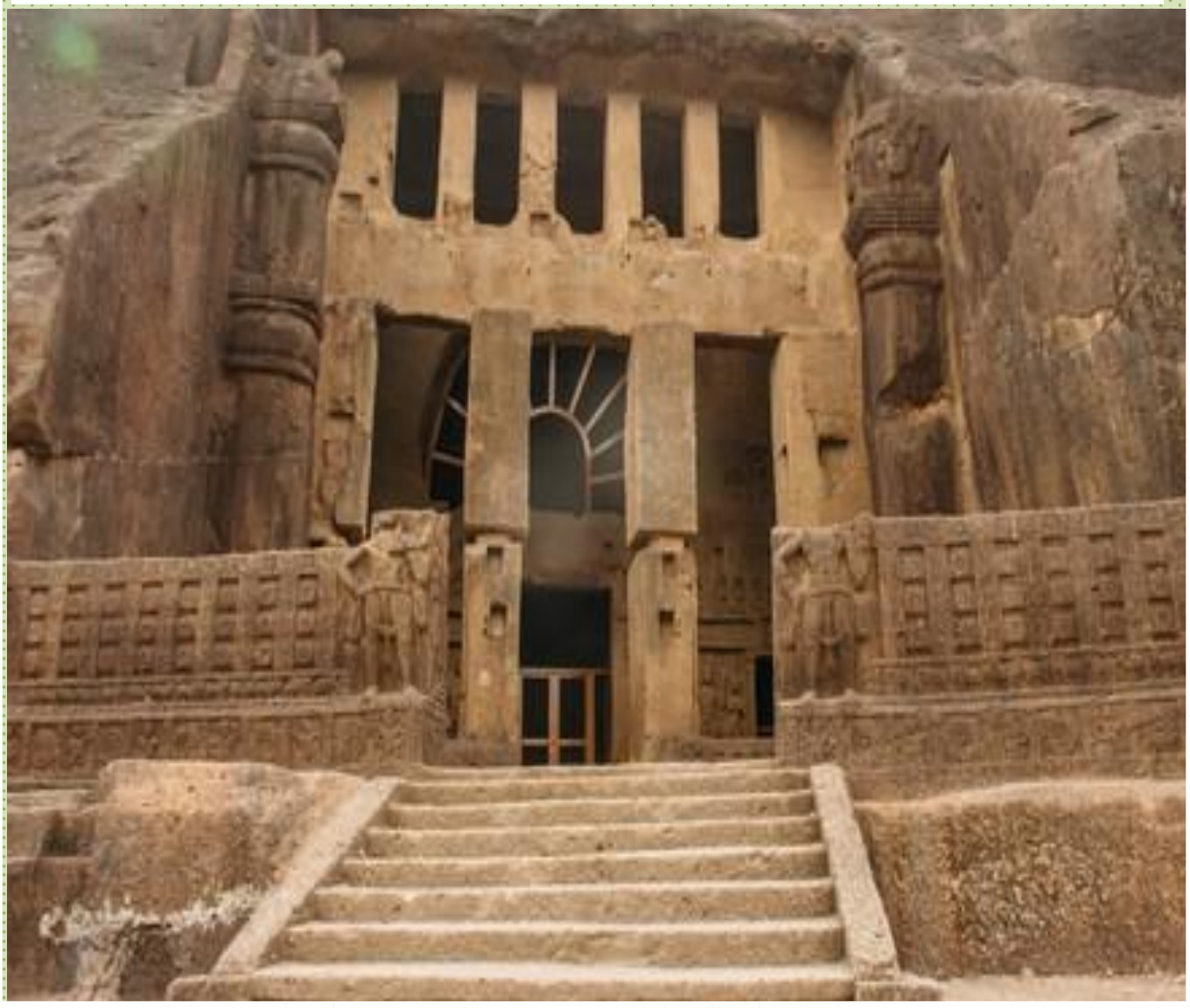

संरक्षक

श्री जय शंकर प्रसाद
वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक

मार्गदर्शक

श्री सत्येन्द्र सिंह
(मुख्य प्रबंधक)

श्री उमेश कुमार
(मुख्य प्रबंधक)

श्री अविनाश कुमार झा
(मुख्य प्रबंधक)

परामर्शदाता

श्री महेन्द्र पँवार
(वरिष्ठ प्रबंधक)

श्री ललित नगानी
(वरिष्ठ प्रबंधक)

श्री संजय प्रसाद
(वरिष्ठ प्रबंधक)

संपादक

रंजना चौधरी
प्रबंधक – राजभाषा

संपर्क

राजभाषा विभाग
मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

मेल :
hindimsro@centralbank.co.in
दूरभाष : 022- 62531268

विषय –सूची

1.	वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक जी का संदेश	3
2.	मुख्य प्रबंधक जी का संदेश	5
3.	वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक का स्वागत	6
4.	भावभिनी बिदाई	7
5.	भारतीय बैंकिंग- दशा और दिशा	8
6.	मुउक्षेका में सर पोचखानावाला जी की 140वी जयंती	19
7.	विभिन्न शाखाओं में 140वीं जयंती	20
8.	खाना खजाना	23
9.	हिन्दी कार्यशाला.....	26
10.	सत्यनारायण पूजा.....	27
11.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	28
12.	हिन्दी दिवस समारोह	29
13.	पास बुक प्रटिंग	32
14.	काव्य-कुंज	35
15.	सेन्ट किसान संपर्क मेला	36
16.	कहानी	37
17.	मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय – एक नजर.	39

पत्रिका में लिखी गई रचनाओं में व्यक्त विचार स्वयं लेखक के हैं, संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट सथियों,

सर्वप्रथम आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ,

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका **"सेन्ट कान्हेरी"** के माध्यम से आप सभी से पहली बार वार्तालाप करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है. मैंने दिनांक 05 जुलाई, 2021 को मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में क्षेत्रीय प्रबंधक के रुप में कार्यभार ग्रहण किया है. इस पत्रिका मे माध्यम से आप सभी से जुड़ते हुए मैं अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ.

साथियों, हमारे सामने व्यावसायिक विकास की गंभीर चुनौतियाँ खड़ी है. अग्रिम पोर्टफोलियो (portfolio) में गुणात्मक वृद्धि दर्ज करनी है. रिटेल, एमएसएमई तथा कृषि में अपने आबंटित लक्ष्यों को प्राप्त करना है, मैं आप सभी का आवाहन करता हूँ कि आइये, एक टीम के रुप में कार्य करते हुए मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय को मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय का अग्रणी क्षेत्र बनाना है, हमें हमारे सभी लक्ष्यों को प्राप्त करना है.

हमारा बैंकिंग व्यवसाय ग्राहक सेवा से जुड़ा है. इसलिए हमारे बैंक की प्रगति एवं विकास के लिए कुछ बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है. हमें सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करते हुए उनकी समस्याओं का समाधान करना है. ग्राहकों से ही हमारा अस्तित्व है, बिना ग्राहक के हम कुछ भी नहीं है. सभी सरकारी योजनाएँ जैसे पीएमजेजेबीवाय, पीएमएसबीवाय, एपीवाय, सुकन्या समृद्धि आदि योजनाओं को अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुँचाना है. कासा में वृद्धि करना है. गैर निष्पादित आस्तियों की वसूली पर जोर देना है नए बचत तथा चालू खातें खोलना है. तभी हम अपने लक्ष्य को हासिल कर पायेंगे.

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै:!

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा :

कोई भी काम कड़ी मेहनत से ही पूरा होता है. सिर्फ सोचने भर से नहीं, कभी भी सोते हुए शेर के मुंह में हिरण खुद नहीं आ जाता है.

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपु: ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कृत्वा यं नावसीदति ॥

मनुष्यों के शरीर में रहने वाला आलस्य ही सबसे बड़ा शत्रु होता है. परिश्रम के समान दूसरा कोई अन्य मित्र नही होता क्योंकि परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं होता है.

आइए हम सभी मिलकर अपने बैंक के और बेहतर विकास एवं प्रगति के लिए अपना अधिकतम योगदान दे.

शुभकामनाओं सहित,

जय शंकर प्रसाद

पाठकों से अनुरोध

आपसे अनुरोध है कि ई-पत्रिका मे आगामी अंक हेतु लेख, कहानियाँ, कविताएँ, चुटकुले या रसोई के व्यंजन, दर्शनीय स्थल आदि की जानकारी हमें hindimsro@centralbank.co.in पर प्रेषित करें. उक्त सामग्री हमें हिन्दी-अंग्रेजी- क्षेत्रीय भाषा में भेजी जा सकती है.

मुख्य प्रबंधक महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका "सेन्ट कान्हेरी" के माध्यम से संवाद करते हुए अपार हर्ष अनुभव कर रहा हूँ.

साथियों, आप सभी को पता ही है हम सभी कोविड-19 के महाप्रकोप का सामना कर रहे हैं. इस कोरोना त्रासदी ने विश्व अर्थव्यवस्था के साथ-साथ देश की बैंकिंग गतिविधियों को भी बुरे तरह से प्रभावित किया है. इस महाप्रकोप में भी हमारी बैंकिंग सेवायें ग्राहकों को आवश्यक सेवायें प्रदान करती रही है. इस मौजूदा विपरीत परिस्थितियों में भी आप सभी ने जिस प्रतिभा का परिचय दिया है वह अतुल्यनीय है. मुझे आशा ही नही बल्कि पूरा विश्वास है आप इसी तरह आगे भी हम अपनी मेहनत जारी रखकर हमारे बैंक की प्रगति एवं विकास में अपना पूरा योगदन देंगे .

आइए हम सभी एकजुट होकर अपनी मेहनत से अपने बैंक के विकास के लिए एक अतिरिक्त कदम आगे बढ़ाए.

शुभकामनाओं सहित,

श्री सत्येन्द्र सिंह
मुख्य प्रबंधक
मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

हार्दिक स्वागत

वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री जय शंकर प्रसाद जी का मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में हार्दिक स्वागत

भावभिनी बिदाई

क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सुधांशु शेखर जी का स्थानांतरण मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय से ठाणे क्षेत्रीय कार्यालय में हो गया. उनके बिदाई समारोह की कुछ झलकियाँ

श्री रोहित तिवारी
सहायक प्रबंधक
सीएफबी – मुंउक्षेका

भारतीय बैंकिंग- दशा और दिशा

प्रस्तावना

वर्तमान समय में हमारे देश में बैंकिंग उद्योग समुचित मात्रा में प्रतिस्पर्धा का दबाव सहने एवं उससे पार पाने में निपुण तथा सक्षम है, जिसका प्रमाण वैश्विक वित्तीय संकट 2008 हैं जिसका प्रभाव भारत में अपेक्षित कम रहा. वैश्वीकरण के इस दौर में बदलते तकनिकी नवाचार, नए निजी और विदेशी बैंको के प्रवेश के साथ वित्तीय उदारीकरण और कोर्पोरेट क्षेत्र में नियामक परिवर्तन के कारण भारत में भी 1990 के दशक से बैंकिंग क्षेत्र तेजी से बदला हैं. भारतीय बैंकिंग उद्योग धीरे-धीरे सर्वश्रेष्ठ लेखांकन पद्धति अपनाने की ओर अग्रसर हैं, साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत विवेकपूर्ण मानदंड, उच्च प्रकटीकरण के साथ और अधिक पारदर्शिता, कॉर्पोरेट प्रशाशन और जोखिम प्रबंधन, व्याज दरों को नियंत्रण मुक्त करना जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं. जबकि निर्देशित ऋण की कठोरता को उत्तरोत्तर कम किया जा रहा हैं. वर्तमान समय में हमारे देश में अच्छी तरह से विकसित विविध बैंकिंग प्रणाली हैं जिसमे सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, विदेशी बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक (पुरानी और नई पीढ़ी दोनों), क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और सहकारी बैंक तथा भारतीय रिज़र्व बैंक इस बैंकिंग प्रणाली के संचालक के रूप में हैं.

बैंक अर्थात क्या ?

भारतीय बैंकिंग कंपनी अधिनियम-1949 के अनुसार, ऋण देना और विनियोग के लिए सामान्य जनता से राशि जमा करना तथा चेको, ड्राफ्टों और आदेशों द्वारा माँगने पर उस राशि का भुगतान करना बैंकिंग व्यवसाय कहलाता हैं और इस व्यवसाय को करने वाली संस्था बैंक कहलाती हैं.

भारत में बैंको का वर्गीकरण

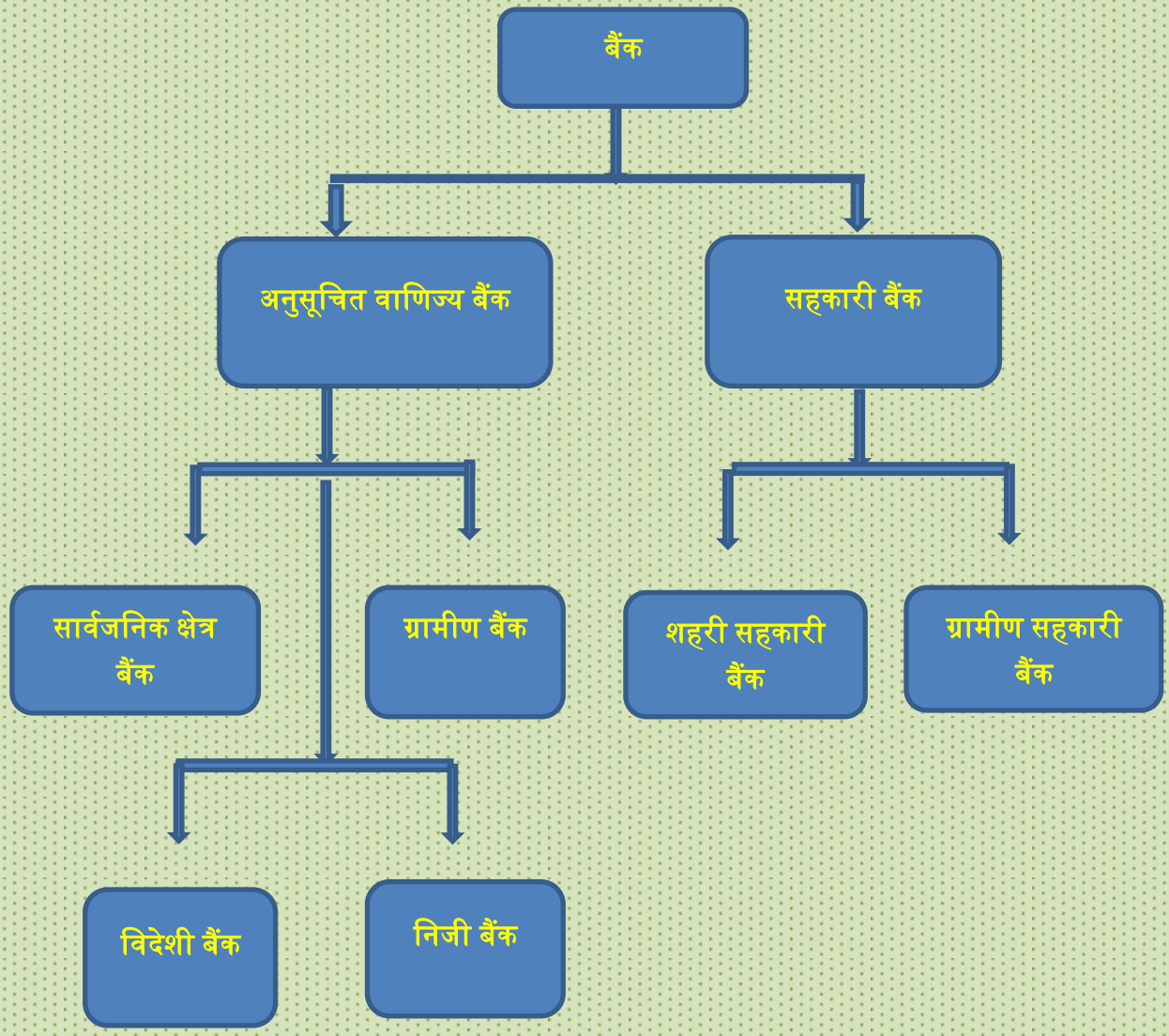

भारतीय बैंको का इतिहास :

भारतीय बैंकिंग प्रणाली का अपना एक अलग ही ऐतिहासिक दृष्टिकोण हैं. हालाँकि पारम्परिक बैंकिंग का परिचालन बहुत बाद में शुरू हुआ लेकिन प्राचीन काल में बैंकिंग प्रणाली की अवधारणा अपने आप में एक अलग नींव रख चुकी थी. भारतीय बैंकिंग की पुरातनता को स्थापित करने वाले

साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों साक्ष्य हैं. वैदिक साहित्य में जहा ऋण लेन देन का उल्लेख मिलता हैं वही 5वी एवं 6वी शताब्दी ईसा पूर्व के बौद्ध जातक में साहूकारों का उल्लेख मिलता हैं. इसी क्रम में मनु स्मृति में "ऋण की वसूली"और"जमा की प्रतिज्ञा" का उल्लेख मिलता हैं. प्राचीन समय में अधिकांशतः धनीक लोग मंदिर में अपना धन रखना सबसे सुरक्षित समझते थे, और मंदिर के पुजारी अक्सर इन पैसो का उपयोग आय सर्जन में, जरुरतमंदो के सहाय स्वरुप इस्तेमाल में लाते थे. यह पहली बार था की जब लोग इस प्रणाली के अंतर्गत वित्तीय संसाधनों का उपयोग करके वित्तीय लेन-देन में शामिल हुए थे.

भारत में वर्ष 1786 में पहली बैंक की स्थापना की गई जिसे जनरल बैंक ऑफ़ इंडिया के रूप में नामित किया गया था. इसके बाद हिंदुस्तान बैंक जिसका संचालन वर्ष 1790 के दौरान शुरू किया गया था. ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के कारण उस समय इस क्षेत्र में विपुल प्रमाण में बैंकिंग इकाइयों का प्रवाह देखा गया था. इस कंपनी ने अपने व्यवसाय का विस्तार किया जिसके परिणामस्वरूप व्यापार उद्देश्यों को पूरा करने के लिए औपचारिक बैंकिंग प्रणाली की जरुरत पड़ी. उस समय तक व्यक्तिगत उपयोग के लिए ऋण का प्रवाह बहुत हद तक सिमित था. कंपनी ने व्यापार के सुचारु रूप से संचालन के लिए निम्नलिखित बैंको की स्थापना की-

1. बैंक ऑफ़ बंगाल (1809)
2. बैंक ऑफ़ बॉम्बे (1840)
3. बैंक ऑफ़ मद्रास (1843)

इन तीनो बैंक को प्रेसीडेन्सी बैंक कहा जाता था. वर्ष 1870 के दौरान बैंक ऑफ़ हिंदुस्तान की स्थापना हुई थी, इसके बाद इलाहाबाद बैंक की स्थापना हुई जिसकी स्थापना भारतीयों के द्वारा की गई थी. 1906 से 1913 के बीच बैंक ऑफ़ इंडिया, सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, बैंक ऑफ़ बड़ौदा और केनरा बैंक की स्थापना की गई थी. विभिन्न व्यापार केंद्र जहाँ ईस्ट इंडिया कंपनी की अपनी व्यावसायिक संस्थाए थी वहाँ तीन प्रेसिडेंसियल बैंको का संचालन शुरू किया गया था, बाद में इन तीनो बैंको का विलय कर दिया गया था और वर्ष 1920 के दशक में एक अधिनियम द्वारा इसका नाम इम्पीरियल बैंक ऑफ़ इंडिया रखा गया. भारतीय मुद्रा और वित्त पर रॉयल कमीशन (1926)

की सिफारिशों के बाद भारत में बैंकिंग व्यवसाय को नियंत्रित करने के लिए एक सर्वोच्च प्राधिकरण स्थापित करने का निर्णय लिया गया था जिसके परिणामस्वरूप रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया की स्थापना की गई.

<u>वर्तमान समय में भारतीय बैंको की दशा और दिशा:</u>

दुनिया भर में बैंकिंग क्षेत्र महत्वपूर्ण परिवर्तनों से गुजर रहा हैं और भारत में बैंकिंग क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं हैं. वैश्विक बैंको के साथ प्रतिस्पर्धा किये बिना वैश्विक बैंको की बराबरी हेतु वैश्विक मापदंडो को अपनाने के सम्बन्ध में सुधार की प्रक्रिया प्रयासरत हैं. 1947 में स्वतंत्रता के बाद से ही भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं और विशेष रूप से 1990 के दशक की शुरुआत में अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद से बड़े बदलाव हुए हैं। भारत में बैंकिंग क्षेत्र का व्यापक नेटवर्क हैं, जिसे भारत की बढ़ती और तीव्र गति से विकास की और अग्रसर अर्थव्यवस्था के प्रक्रिया को सुनिश्चित करने के लिए विकसित किया गया हैं.

भारतीय बैंक दोहरी भूमिका निभाते हैं, एक तरफ जहाँ बैंक देश की <u>संपत्ति का सरंक्षण करते हैं वही दूसरी तरफ देश की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों की आपूर्ति</u> भी सुनिश्चित करता हैं. किसी भी देश के विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक हैं कि उसका वित्तीय उद्योग और बैंक विकसित एवं परिपक्व हो, भारतीय परिदृश्य में भी ऐसा ही हैं. भारतीय बैंकिंग उद्योग ने 1980 के दशक के अंत में और 1990 के दशक के शुरुआत में टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौते के तत्वाधान में बहुपक्षीय व्यापार वार्ता के उरुग्वे दौर के बाद विदेशी बैंको की

हिस्सेदारी में वृद्धि देखी. इस अवधि के दौरान आय, जमा ,निवेश,ऋण और अग्रिम और संपत्ति जैसे मापदंडो में विदेशी बैंको की हिस्सेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई. हालाँकि, 1990 के दशक के अंत में यह देखा गया की लाभप्रदता के मामले में विदेशी बैंको के हिस्से में काफी गिरावट हुई. इसे प्रभावित करने वाले दो प्रमुख कारण सार्वजानिक क्षेत्र के बैंको की दक्षता में वृद्धि एवं भारतीय बैंकिंग उद्योग में निजी बैंको का प्रवेश. भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुसार पर्याप्त रूप से पूंजीकृत और अच्छी तरह से विनियमित हैं. ऋण, बाजार और चलनिधि जोखिमों के अध्ययन से पता चलता हैं कि भारतीय बैंक आमतौर पर लचीले हैं और उन्होंने वैश्विक मंदी का अच्छी तरह से सामना किया हैं. भारतीय बैंकिंग उद्योग ने हाल ही में भुगतान और लघु वित्त बैंको जैसे नवीन बैंकिंग मॉडल कि शुरुआत देखी हैं. घरेलू बैंकिंग उद्योग के पुनर्घटन में मदद करने के लिए रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया के नए उपाय एक लम्बा रास्ता तय कर सकते हैं. भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली 25 देशो में सबसे अधिक विकसित हुई हैं, जिसमे भारत कि तत्काल भुगतान सेवा फास्टर पेमेंट्स इनोवेशन इंडेक्स में पांचवे स्तर पर एकमात्र प्रणाली है.

- **बाजार का आकार**

भारतीय बैंकिंग प्रणाली में सहकारी ऋण संस्थानों के अलावा 12 सार्वजानिक क्षेत्र के बैंक, 22 निजी क्षेत्र के बैंक, 46 विदेशी बैंक, 56 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, 1485 शहरी सहकारी बैंक शामिल हैं. मार्च 2021 तक भारत में ए टी एॅम की कुल संख्या भारत में बढ़कर 2,13,000 हो गया है. मार्च के अंतिम पखवाड़े में रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया के द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारतीय बैंको में कुल जमाराशि लगभग 151.13 लाख करोड़ रुपये था जिसमे सार्वजानिक क्षेत्र के बैंको में लगभग 90 लाख करोड रुपये था.

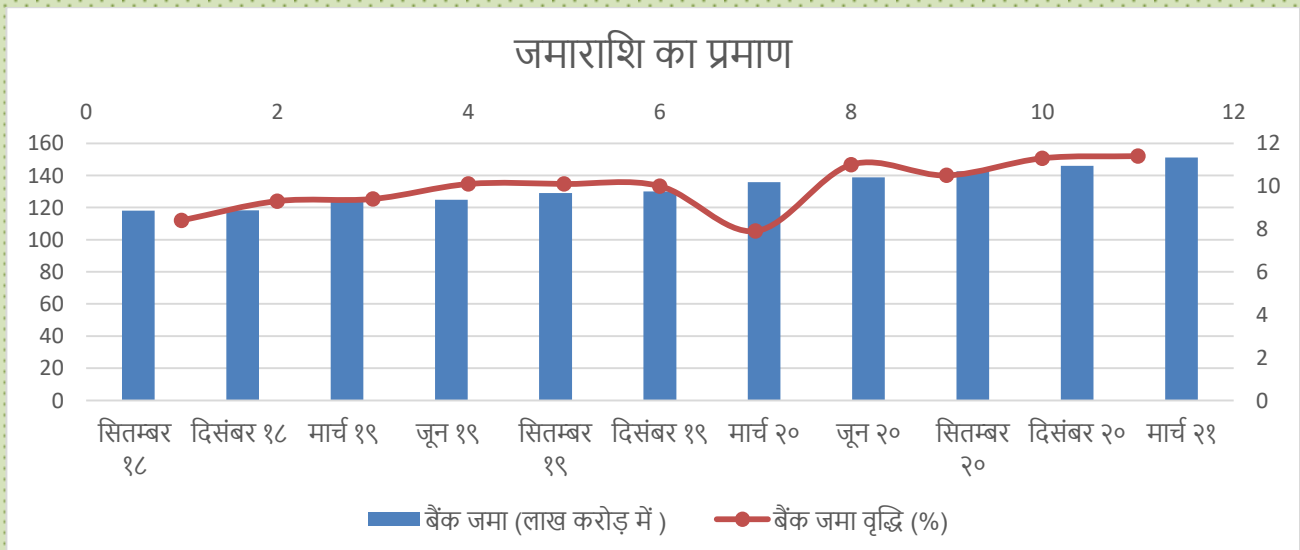

वही अगर बैंक ऋण वृद्धि की बात की जाए तो विविध क्षेत्रो में अनियंत्रित कारणों की वजह से उतार चढाव देखने को मिला है.

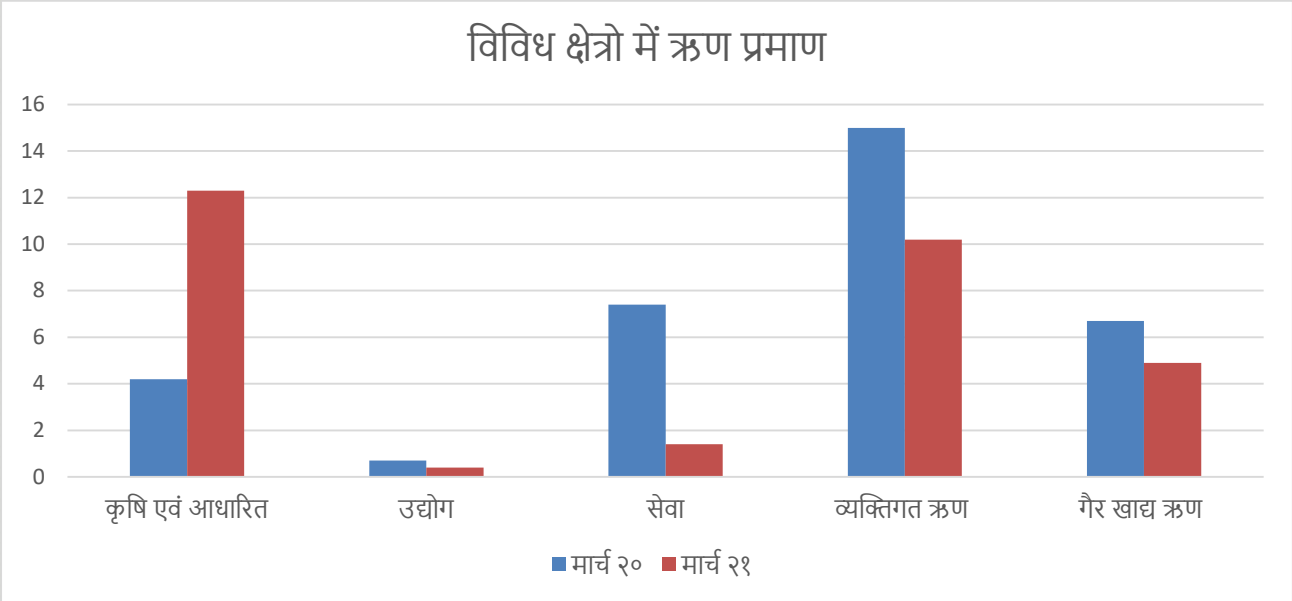

- **निवेश/ विकास**

भारत के बैंकिंग उद्योग में प्रमुख निवेश और विकास शामिल है. 2019 में बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में लगभग 1.72 बिलियन अमेरिकी डॉलर की विलय और अधिग्रहण की गतिविधियाँ देखने को मिली हैं. 27 फरवरी 2021 तक सरकार के प्रमुख वित्तीय समावेशन अभियान "प्रधानमंत्री जन धन योजना" के तहत खोले गए खातों की संख्या 41.93 करोड़ तक पहुंच गई और जन धन खातों में जमा राशि रुपये 1.70 लाख करोड़ हो गई है. फरवरी 2020 में आर्थिक मामलो की मंत्रिमंडलीय समिति ने क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको के पुनर्पूँजीकरण की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए एक और वर्ष के लिए न्यूनतम पूंजी प्रदान करने के लिए मंजूरी प्रदान की. विकास की विविध प्रक्रिया बैंको के माध्यम से संपन्न होती हैं जिसमे जरुरतमंदो को ऋण सुविधा, वीमा की सुविधा, विविध आश्वाशन के माध्यम से विकास की प्रक्रिया सुनिश्चित की जाती है. इसी क्रम में बैंको में विविध मेडिक्लेम पालिसी उपलब्ध कराई जाती हैं जो एक प्रकार से समग्र स्वास्थ्य समाधान हैं और लोगो के अमूल्य जीवन को सुलभ और किफायती बनाता हैं. वही अगर वैधानिक तरलता अनुपात की बात की जाए तो कुल संपत्ति में एस एल आर निवेश और बैंक ऋण का अनुपात सामान स्तर पर बना हुआ है.

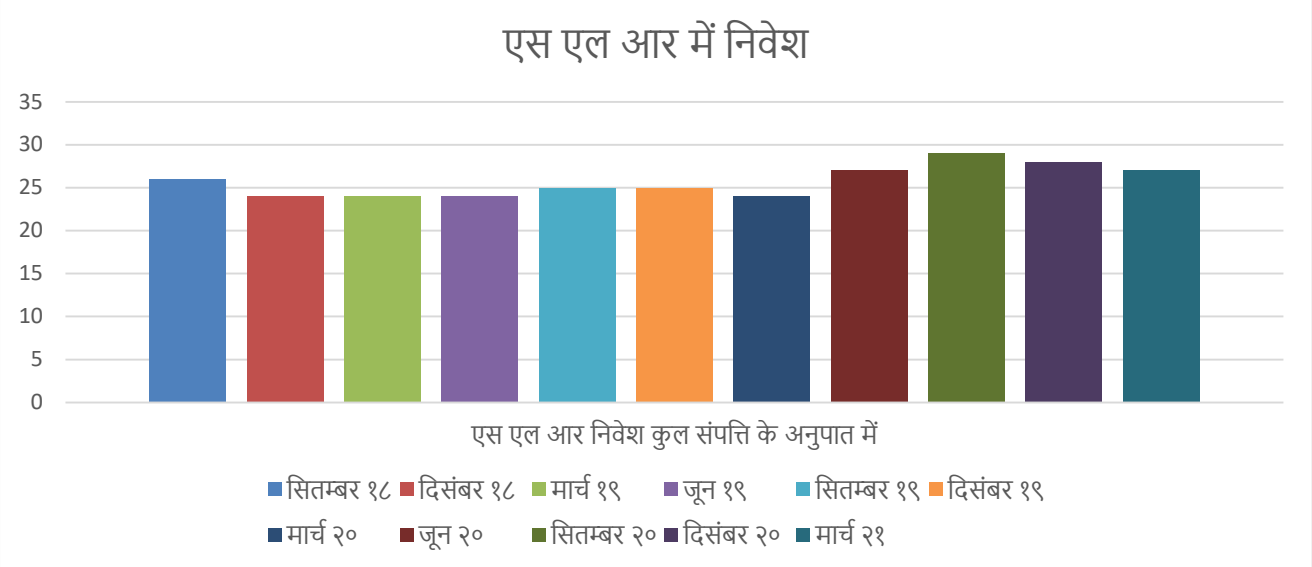

मार्च के अंतिम पखवाड़े में सर्टिफिकेट ऑफ़ डिपॉजिट के स्तर में वृद्धि हुई जबकि कमर्शियल पेपर के संबंध में गिरावट दर्ज की गई थी. मार्च के अंतिम पखवाड़े कमर्शियल पेपर की वार्षिक वृद्धि पिछले वर्ष की -53.7% दर्ज की गई जबकि सर्टिफिकेट ऑफ़ डिपॉजिट में यह वार्षिक वृद्धि 5.8% थी.

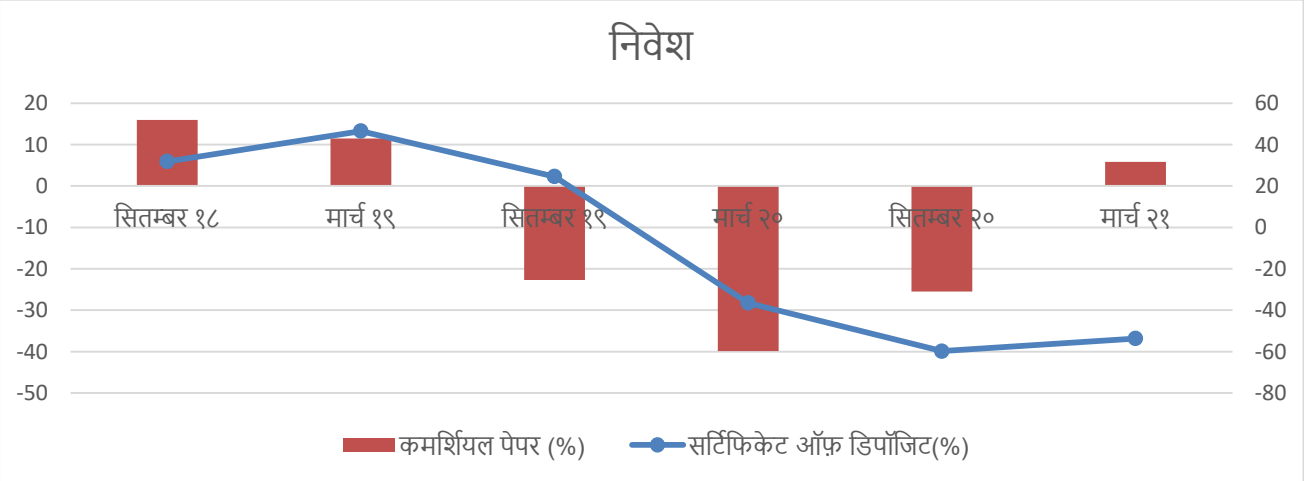

- **बैंक और उद्यमिता का विकास**

व्यापार के दिन प्रतिदिन के कार्यो को सुचारु रूप से चलाने एवं उद्यमों के साथ- साथ आत्मनिर्भर प्रणालियों में उनका अंतिम विकास सुनिश्चित करने में बैंको का महत्वपूर्ण योगदान है. आज बैंकिंग में व्यापक बदलाव के चलते यह आवश्यक हो गया हैं कि बैंक अपने द्वारा वित्तपोषित उद्यमों पर निरंतर निगरानी रखे. आज उद्यमों में बुनियादी ढांचों से लेकर विकास की प्रक्रिया तक हर एक प्रक्रिया में बैंक अहम योगदान दे रहे हैं. भारतीय बैंक के विविध प्रयासों के वजह से आज व्यावसायिक उद्यमों में प्रबंधन की गुणवत्ता में सुधार हो रहा हैं जिससे बैंक की परिसम्पत्तियों कीगुणवत्ता में भी सुधार हो रहा हैं. बदलते परिदृश्य के साथ उभरते वित्तीय विकास पर अब उभरते बाजारों पर आगे बढ़ने और नेतृत्व करने की जिम्मेदारी है.

➢ गैर निष्पादित संपत्ति

एक अहवाल के अनुसार ऋण चुकौती और परिसंपत्ति वर्गीकरण पर रोक सहित विविध राहत उपायों के प्रभाव से बैंको की सकल गैर निष्पादित संपत्ति 31 मार्च 2021 तक बढ़कर लगभग 9.6-9.7 प्रतिशत हो सकती हैं. इक्रा रेटिंग के अनुसार बैंको के सकल गैर निष्पादित परिसंपत्तियाँ 31 मार्च, 2022 तक लगभग 9.9 – 10.2 प्रतिशत हो सकती है. रेटिंग एजेंसी ने एक रिपोर्ट में कहा की कोविड -19 महामारी के प्रभाव के बावजूद भी उधारकर्ताओं की ऋण चुकौती क्षमता वित्तीय वर्ष 2020-21 के पहले नौ महीने के दौरान बैंक के लिए सकल ताजा फिसलन (फ्रेश स्लिपेज) 1.8 लाख करोड़ थी, जबकि वित्तीय वर्ष 2020 के दौरान यह 3.6 लाख करोड़ थी. इसके पीछे की मुख्य वजह विभिन्न राहत उपाय, ऋण चुकौती पर रोक, परिसंपत्ति वर्गीकरण का ठहराव और गारंटीकृत आपातकालीन क्रेडिट लाइन (जी ई सी एल) के तहत दी गई तरलता हैं. एक अहवाल के प्रमुख के अनुसार मुख्य संपत्ति गुणवत्ता और रिस्ट्रक्चरिंग का प्रमाण उत्साहजनक हैं, लेकिन ये बैंको की संपत्ति गुणवत्ता पर अन्तर्निहित तनाव को नहीं दर्शाते हैं. उन्होंने ने यह भी बताया की अधिस्थगन (मोराटोरियम) के उथ्थान के बाद अतिदेय श्रेणियों में ऋण का स्तर बढ़ जाएगा और इसका प्रभाव संपत्ति की गुणवत्ता पर भी पड़ेगा, क्योंकि विभिन्न हस्तक्षेपों और राहत उपायों ने बैंको की लाभप्रदता और पूंजी पर की एक क्षति को रोक रखा है. अहवाल में यह भी कहा गया हैं कि बैंको द्वारा पुराने गैर निष्पादित संपत्ति पर किये गए प्रावधानों के कारण बैंको के शुद्ध गैर निष्पादित संपत्ति की स्थिति अपेक्षाकृत सही रहेगी. 31 मार्च 2021 तक यह बढ़कर लगभग 3.0 से 3.1 प्रतिशत तक रहने की संभावना हैं जबकि 31 मार्च, 2022 तक 2.5 प्रतिशत तक पहुंच सकता हैं.

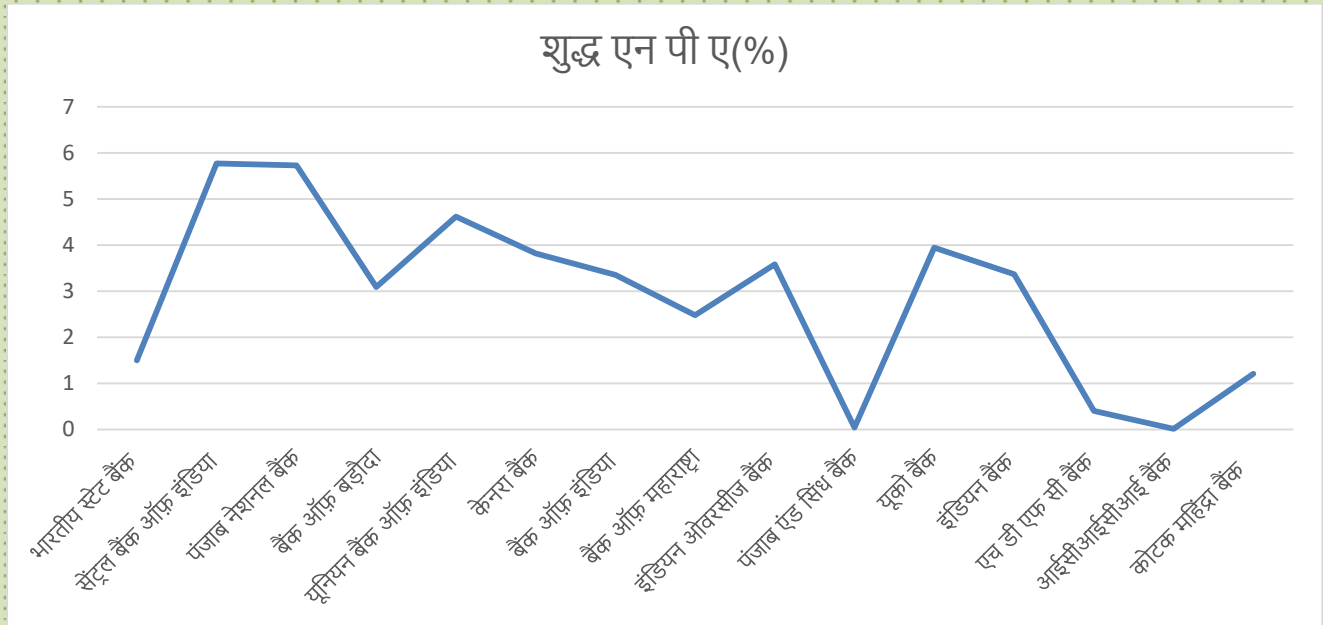

- **पुनः पूंजीकरण**

शुद्ध गैर निष्पादित संपत्ति की गिरावट और वित्तीय वर्ष २०२१ के दौरान नई पूंजी जुटाने के कारण पूंजी की स्थिति में सुधार के साथ-साथ आतंरिक उपार्जन जो बांड यील्ड में तेज गिरावट के कारण बफर हो गए थे, उस वजह से बैंको के लिए सॉल्वेंसी की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर बनेगी और उनके नुकसान की अवशोषण क्षमता सुधरेगी. वित्तीय वर्ष 2021 के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र की बैंको ने 12,000 करोड़ रुपये और निजी बैंको ने बाजार स्त्रोतों से 53,600 करोड़ की इक्विटी पूंजी जुटाई है. इसके अलावा भारत सरकार ने वित्तीय वर्ष 2021 के लिए अपने बजटीय पुनःपूंजीकरण के हिस्से के रूप में सार्वजनिक बैंको में 20,000 करोड़ रुपये का भी निवेश किया हैं.

- **भारतीय बैंकिंग : भविष्य की राह**

भविष्य हमेशा अनिश्चित होता हैं लेकिन आनेवाला समय पहले के समय की अपेक्षा और अधिक अनिश्चित होता दिख रहा है. हमारे समय की परेशानी यह हैं कि भविष्य वह नहीं हैं जो हुआ करता था. भविष्य अवसरों के साथ हम सब के लिए उतनी ही चुनौती भी लेके आता है. जैसे - जैसे भारत का बैंकिंग उद्योग सकारात्मक बदलावों का अनुभव कर रहा हैं वैसे वैसे बैंको की दिशा भी बदल रही हैं. भारतीय बैंक आज वैश्विक प्रतिस्पर्धियों के बराबर होने के लिए डिजिटल तकनीकों में भारी निवेश कर रहे हैं. एक आम आदमी के लिए बैंकिंग सेवाओं के डिजिटलीकरण का मतलब भुगतान और जमा का डिजिटलीकरण हो सकता है, लेकिन वास्तव में इसमें कई अन्य गतिविधिया भी शामिल हैं. किसी भी अन्य व्यवसाय या संगठन की तरह बैंको में भी विक्रेता और ग्राहक होते हैं. पिछले कुछ वर्षो में बैंक ग्राहक और विक्रेताओं दोनों की जरूरतों पूरा करने के लिए तकनिकी विभाग में हर संभव परिवर्तन ला रहे है. बैंक एवं वित्तीय संस्थानों ने बैंकिंग के लगभग सभी कार्यो में प्रौद्योगिकी के कार्यान्वन को प्रोत्साहित किया हैं फिर चाहे वह क्रेडिट रेटिंग, सिबिल स्कोर , निवेश बैंकिंग, निजी बैंकिंग, उपभोक्ता सेवा और ऋण अदि हो. जिसके परिणामस्वरूप कर्मचारी उत्पादकता में सुधार एवं बेहतर उपभोक्ता अनुभव प्रदान करने में सहायता मिल रही हैं. भारतीय बाजार में कई प्रौद्योगिकी समाधान प्रदाता भी बैंको और अन्य वित्तीय संस्थानों को अपने प्रौद्योगिकी खेल को बढ़ने में सहायता कर रहे हैं. ये समाधान प्रदाता बैंको को अपने वर्तमान प्रौद्योगिकी पदचिन्ह का आकलन करने में मदद करते हैं और उपयुक्त तकनीक का सुझाव देते हैं जिसका उपयोग उनके डिजिटल व्यवसाय में तेजी लेन के लिए किया जा सकता हैं. बुनियादी ढांचे पर बढ़े हुए खर्च , परियोजनाओं के तेजी से कार्यान्वयन और सुधारों को जारी रखने से बैंकिंग क्षेत्र में विकास को और गति मिलने की उम्मीद है. इन सभी कारको से पता चलता है की भारत का बैंकिंग

क्षेत्र एक मजबूत विकास के लिए तैयार है क्योकि तेजी से बढ़ती व्यवस्था अपनी ऋण जरूरतों के लिए बैंको की ओर रुख करेंगे. साथ ही , प्रौद्योगिकी में प्रगति ने मोबाइल और इंटरनेट बैंकिंग सेवाओं को सामने ला दिया है. बैंकिंग क्षेत्र अपने ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने और ग्राहकों के समग्र अनुभव को बढ़ाने के साथ -साथ बैंको को प्रतिस्पर्धा मैं बढ़त देने के लिए उनकी प्रद्योगिकी के बुनियादी ढांचे को उन्नत करने पर अधिक जोर दे रहा है.

इंडिया रेटिंग एंड रिसर्च संस्था ने वित्त वर्ष 22 के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको के दृश्टिकोण को "नकारात्मक" से "स्थिर" कर दिया हैं। विनियामक परिवर्तनों से सार्वजनिक क्षेत्र के ऑथोराइज्ड पूंजी जुटाने कि क्षमता में सुधार हुआ. इसके अलावा पुराने ख़राब ऋणों पर एक उच्च प्रावधान कवर एवं समग्र प्रणालीगत समर्थन के परिणामस्वरूप बैंको कि कार्यक्षमता एवं कार्यदक्षता में वृद्धि दर्ज की गई हैं.

भारतीय बैंको की चतुर्थ तिमाही वित्तीय वर्ष 2021 की स्थिति

	लाभ/हानि (करोड़)	शुद्ध एनपीए (%)	परिसंपत्ति पर प्राप्ति (%)
भारतीय स्टेट बैंक	6450.75	1.5	0.58
सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया	-1349.21	5.77	-1.58
पंजाब नेशनल बैंक	586.33	5.73	0.18
बैंक ऑफ़ बड़ौदा	-1046.5	3.09	-0.36
यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया	1329.77	4.62	0.49
केनरा बैंक	1010.87	3.82	0.36
बैंक ऑफ़ इंडिया	250.19	3.35	0.13
बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र	165.08	2.48	0.35
इंडियन ओवरसीज बैंक	349.77	3.58	0.5
पंजाब एंड सिंध बैंक	160.79	0.04	0.01
यूको बैंक	80	3.94	0.12
इंडियन बैंक	1708.85	3.37	1.09
एचडीएफसी बैंक	8186.51	0.4	0.5
आईसीआईसीआई बैंक	4402.61	0.01	0.02
कोटक महिंद्रा बैंक	1682.37	1.21	0.43

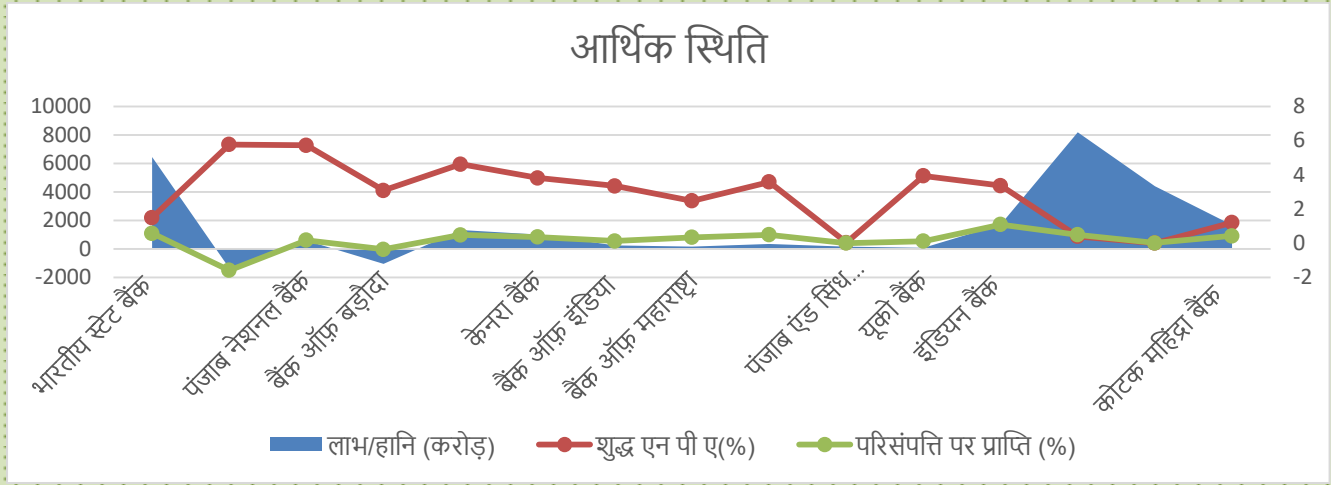

उपसंहार

वित्तीय क्षेत्र के सुधारो ने भारतीय बैंकिंग उद्योग का चेहरा एक अधिक विनियमित और संगठित उद्योग में बदल दिया हैं. उदारीकरण और वैश्वीकरण के साथ-साथ बाजार के विकास के परिणामस्वरूप बैंको में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करनी वाली प्रौद्योगिकी के साथ बहुत अधिक गति से परिवर्तन हुआ हैं. भारतीय वित्तीय प्रणाली सार्वजनिक क्षेत्रो के उपक्रमों, निजी बैंको, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, विदेशी बैंको, सहकारी बैंको जैसे कई अन्य संस्थाओ की एक लम्बी श्रंखला हैं. वे दिन गए जब ग्राहकों को भारत में वाणिज्यिक बैंको में लेनदेन करने के लिए लम्बी कतारों में खड़ा रहना पड़ता था, अब इंटरनेट बैंकिंग के प्रसार के साथ-साथ लेनदेन अधिक सुविधाजनक हो गया हैं. हालाँकि, भारत में बैंकिंग क्षेत्र ने उभरते हुए परिवेश के साथ काफी हद तक समायोजन किया हैं और अपनी पहुंच और विविधता का विस्तार करने की कोशिश कर रहा हैं.

आज भारतीय बैंक अंतर्राष्टीय प्रतिस्पर्धा और बेसल-III के मानदंडों के अनुरूप सज्ज हैं एवं भविष्य में आनेवाली बड़ी चुनौतियों के लिए भी खुद को सक्षम बना रहे हैं. दुनिया की आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं का विकास मुख्य रूप से उनके पास उपलब्ध ऋण क्षमता के सर्वोत्तम उपयोग से हुआ हैं. पल-पल परिवर्तित दूरगामी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को दूर करके उनमे सामंजस्य स्थापित करने की जिम्मेदारी आज भारतीय बैंको ने उठा रखी हैं जो भविष्य में और भी महत्वपूर्ण होने वाली हैं. प्राथमिक विकास चालक जो भारतीय बैंकिंग क्षेत्र को बदलने में मदद करेंगे, उनमे वित्तीय समावेशन, संवर्धित, भुगतान प्रणाली, इंटरनेट और मोबाइल सिस्टम आदि का समावेश होता हैं. भारतीय बैंक आज औद्योगिक विकास के चालक होने के साथ साथ समाज के हर एक तबके के विविध गतिविधियों को बढ़ावा देने, पोषित करने, उनका समर्थन करने एवं उनकी निगरानी करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं.

दिनांक 09.08.2021 को मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में सर सोराबजी पोचखानावला जी की 140वीं जयंती मनाई गई.

दिनांक 09.08.2021 को मुंउक्षेका के अंतर्गत आनेवाली शाखाओं में भी सर सोराबजी पोचखानावला जी की 140वीं जयंती मनाई गई.

भांडुप शाखा

बीकेसी शाखा

चेम्बूर शाखा

दहिसर (पूर्व) शाखा

दहिसर (पश्चिम) शाखा

गंजाड शाखा

घाटकोपर शाखा

गोरेगाँव शाखा

जे.बी.नगर शाखा

जे.वी.पी.डी शाखा

कांदिवली शाखा

खार शाखा

खेरनगर शाखा

कुरार विलेज

मालाड शाखा

मुलुंड शाखा

नेहरु नगर शाखा

सेवन बंगलो शाखा

सुंदर नगर शाखा

टीईसी शाखा

टर्नर रोड शाखा

विले पार्ले शाखा

विरार (पश्चिम) शाखा

खाना–खजाना

सुश्री सुनिता बी. सिंह
सहायक प्रबंधक
मालाड शाखा

कलमी वड़ा

सामग्री : चना दाल – 1 कप, मूँग दाल – ¼ कप, थोड़ा अदरक, हरी मिर्च -4, हरी धनिया , नमक, उबले आलू-2, बेसन- 1 चम्मच, लाल मिर्च पाउडर- 1 चम्मच, काली मिर्च पाउडर - 1 चम्मच, प्याज-1, चटनी अथवा सॉस

विधि : दोनो दालों को धोकर 4 घंटे भिगो कर रखें. मिक्सर में हरी मिर्च, धनिया, अदरक, नमक, लाल मिर्च पाउडर, काली मिर्च पाउडर डाल कर पीस लें. दालों को भी दरदरा पीस ले. सभी को मिला लें . तेल गरम करें और तेज आँच पर इसके गोले डाले. फिर 10 सेकंद बाद पलट दें. आँच कम कर दें. दोनो तरफ पकाएँ लेकिन भूरा होने तक नहीं. ठंडा होने पर ½ इंच मोटी स्लाइस में काट लें. सर्व करने से पहले स्लाइस को डीप फ्राई करें. कलमी वड़े सर्व करने के लिए तैयार हैं. इसे चटनी अथवा सॉस के साथ परोसें.

बेडमी पूरी और आलू की सब्जी

सामग्री : आटा गूँथने के लिए : आटा – 1 कप, सूजी- ½ कप, मैदा – ½ कप, अजवाइन – ½ छोटा चम्मच, कसूरी मेथी- 1 बड़ा चम्मच, नमक – 1 छोटा चम्मच, तेल – 3 छोटा चम्मच, घी- 2 छोटा चम्मच, गुनगुना पानी- आटा गूँथने के लिए.

भरने के (स्टफिंग) के सामग्री : सफेद उड़द की दाल – 1 कप, हींग- ½ छोटा चम्मच, दरदरी कुटी सौंफ – 2 छोटे चम्मच, लाल मिर्च पाउडर - ½ छोटा चम्मच, अमचूर पाउडर – ½ छोटा चम्मच, धनिया पाउडर - ¾ छोटा चम्मच, गरम मसाला पाउडर - 1 छोटा चम्मच, नमक – 1 छोटा चम्मच, कद्दूकस किया अदरक – 1 इंच टुकड़ा, दरदरी कुटी काली मिर्च- ¼ छोटा चम्मच, जीरा- ½ छोटा चम्मच, पानी- 1 कप.

विधि : आटा और सूजी, मैदा ले उसमें कसूरी मेथी, अजवाइन, नमक , तेल तथा घी डालकर मिला लें पहले सूखा ही अच्छे से मिक्स कर लें. फिर थोडा थोडा गुनगुना पानी डालते हुए सख्त आटा गूँथ ले. आटे को ढँककर सेट होने के लिए रख लें.

स्टफिंग के लिए विधि : उडद दाल को पानी से अच्छे धो ले और एक कड़ाई में डाल कर धीमी आँच पर दाल को 7-8 मीनट तक ड्राई रोस्ट कर लें. थंडा होने पर दरदरा पीस लें. उसमें हींग, दरदरी कुटी सौंफ, लाल मिर्च पाउडर, दरदरी कुटी काली मिर्च, अमचूर पाउडर, धनिया पाउडर, गरम मसाला पाउडर, जीरा,नमक अदरक डाल कर सभी को मिक्स कर लें.

सब्जी के लिए सामग्री : उबले आलू - 4, भुना बेसन- 1 बड़ा चम्मच, तेल- 4 बड़े चम्मच, जीरा- 1 छोटा चम्मच, हींग- ½ छोटा चम्मच, तेजपत्ता-1, लौंग-4, हल्दी पाउडर - ½ छोटा चम्मच, अदरक- 1 इंच टुकडा, हरी मिर्च- 2, कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर – 1 छोटा चम्मच, टमाटर-2, काली मिर्च पाउडर - ½ छोटा चम्मच, गरम मसाला पाउडर - 1 छोटा चम्मच, धनिया पाउडर – 1 छोटा चम्मच, अमचूर पाउडर - ½ छोटा चम्मच, कसूरी मेथी- 1 बड़ा चम्मच, नमक, पानी- 2 ग्लास, हरा धनिया – 1 बड़ा चम्मच.

सब्जी बनाने की विधि : कड़ाही में बेसन भून कर निकाल लें, तेल डालकर उसमें हींग, लौंग़, तेजपत्ता डाल दें, अदरक और हरी मिर्च, को कूटकर डाल दें, थोडा सा पका लें, हल्दी पाउडर और कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर डालें, टमाटरों की प्युरी बना कर डालकर धीमी आँच पर पकाएँ . कडाही तेल छोडने लगे तो भुना हुआ बेसन, उबले आलू छोटा छोटा तोडकर डाल दें. 2 ग्लास पानी, नमक डालकर पाँच मिनट पका लें. काली मिर्च पाउडर, गरम मसाला, अमचूर पाउडर, कसूरी मेथी डाल कर पकाएँ, अगर सब्जी में आलू के बडे टुकडे दिख रहे हों तो चलाते वक्त चम्मच से थोडा दबा दें. हरा धनिया डाल दें. सब्जी तैयार है.

बेडमी पुरी बनाने की विधि : कडाही में तेल गरम करने के लिए रख दें. आटे और स्टफिंग को हाथों से मसलकर चिकना कर लें. इसके बाद आटे की छोटी लोई बनाकर उसे हाथों से थोड़ा बढ़ा लें. इसमें 1 छोटा चम्मच स्टफिंग डालकर आटे को चारों तरफ से उठाते हुए बंद कर लें. लोई को थोडा सा हाथ से दबाकर फ्लैट कर लें. थोडा सा तेल लगाकर पूरी बेल लें. गरम तेल में, मीडियम आँच पर किनारे से दबाते हुए पूरियों को दोनों तरफ से पलट-पलटकर क्रिस्प होने तक तल लें. ध्यान रखें कि पूरी तलने के लिए न तो तेल बहुत ज्यादा गरम न हो और न ही आँच तेज हो. नहीं तो पूरी उपर से लाल हो जाएगी लेकिन अंदर से कच्ची रह जाएगी. ऐसे ही सारी पूरियाँ बनाकर तैयार कर लें. स्वादिष्ट बेडमी पूरी बनकर तैयार है . इसे गरमागरम आलू की सब्जी के साथ सर्व करें.

हिन्दी कार्यशाला

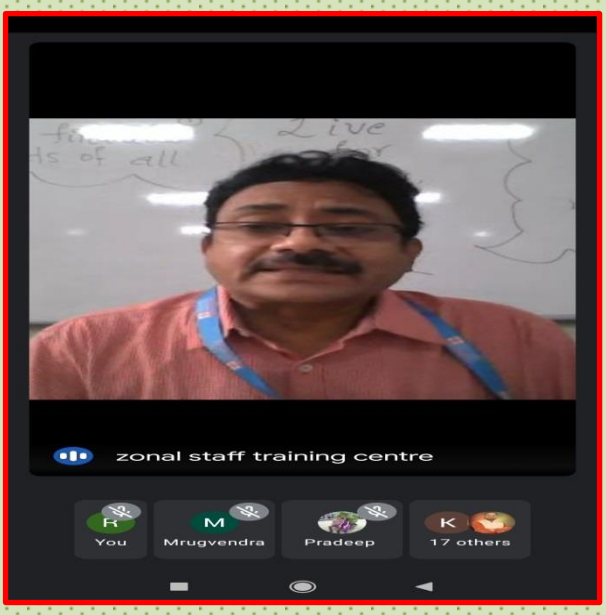

मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय के तत्वावधान में दिनांक 30.08.2021 को अधिकारियों हेतु तथा 31.08.2021 को लिपिकों हेतु दमुक्षेका, मुंउक्षेका तथा ठाणे क्षेका सहित दो संयुक्त हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया. जिसमें मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय से 10 अधिकरियों ने तथा 08 लिपिक कर्मचारियों ने सहभागिता की.

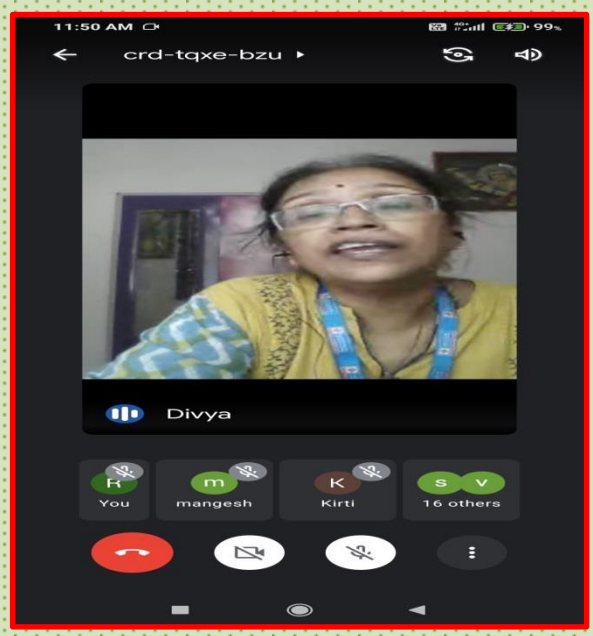

मुउक्षेका में श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मुंबई उत्तर की बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मुंबई उत्तर से संबंधित सितम्बर 2020 एवं मार्च 2021 को समाप्त छमाहियों की बैठक का आयोजन नौवहन महानिदेशक एवं अपर सचिव, भारत सरकार के अध्यक्षता में दिनांक 25.08.2021 को माइक्रोऑफ्ट मीडिया के माध्यम से संपन्न हुई.

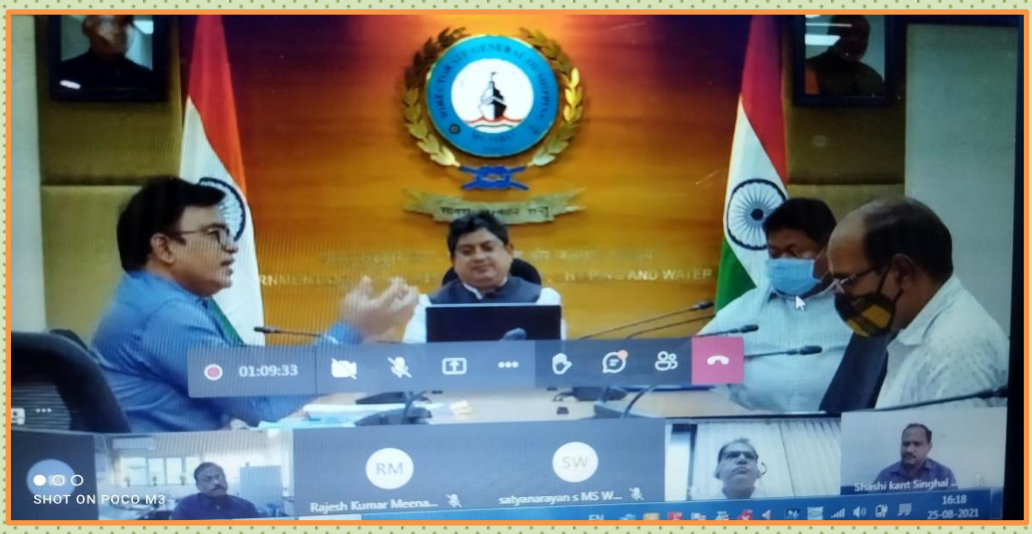

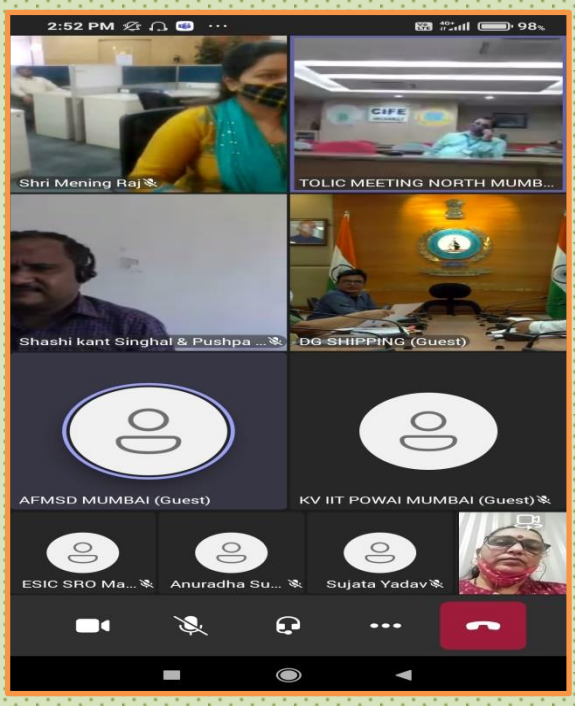

हिन्दी दिवस समारोह

दिनांक 14.09.2021 को मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में माननीय वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री जय शंकर प्रसाद जी की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये गये.

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

हिन्दी दिवस समारोह

REGIONAL OFFICE
दिवस समारोह

हिन्दी दिवस समा

MUMBAI SUBURBAN REGIONAL OFFICE

MUMBAI SUBURBAN REGIONAL OFFICE

MUMBAI SUBURBAN REGIONAL OFFICE

संदीप कुमार सिंह
मुख्य प्रबंधक
सात बंगला शाखा

पासबुक की कहानी (हास्य - व्यंग)

साहब ऊपर की लाइन पढ़कर थोडा अजीब लगा होगा लेकिन बैंक में पासबुक का महत्व ना पहले कम हुआ था ना आज और इसका सबसे बड़ा उदाहरण आपको किसी भी ग्रमीण शाखा में देखने को मिल जाएगा. जहाँ आज भी सबसे बड़ी लाइन पासबुक प्रिंट कराने के लिए लगती है , अब साहब पासबुक प्रिंटर ठहरा निर्जीव प्राणी कभी – कभी धोखा भी दे देता है जो इसका जन्म सिद्ध अधिकार भी है . तो चलिए साहब आज का विषय पासबुक को ही रखते है, लेकिन मै आपको पहले ही यह बता देना चाहता हू की यह हास्य – व्यंग केवल एक काल्पनिक घटनाये हैं और इसका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से दूर दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है. अगर होगा भी तो यह एक संयोग मात्र होगा (यह लाइन मैंने हिंदी फिल्मो से ली है). इस तनाव भरी एवं भागम -भाग की जिन्दगी में आइये कुछ पल हँसी ठहाको के बीच गुजारते है. क्योकि जीवन अनमोल है, इसको थोड़ा हँसने का भी वक्त दीजिये .अच्छा चलिए, इस उपदेश के चक्कर में हमारी कहानी न भटक जाये. तो शुरुआत होती है उत्तर प्रदेश के जिले के ग्रामीण ब्रांच से , ग्रामीण बैंकिंग में पासबुक प्रिंटर के बारे में कुछ रोचक चीजे आपको बताता हूँ , जो मैंने अपनी जिन्दगी में महसूस किया :-

परिदृश्य 1 -सुबह का समय -मेनेजर साहब ब्रांच में प्रवेश करते है बाकी ब्रांच का स्टाफ भी आ गये हैं, एक व्यक्ति मैनेजर साहब के सामने प्रकट होता है, मेरा मतलब सामने आता है. साहब एक महीने से ब्रांच में आ रहा हूँ. आज तक मेरी किताब छप नहीं पाई (पासबुक प्रिंट नहीं हो पाई)

ब्रांच मेनेजर : ब्रम्हांड के सबसे दयनीय प्राणी की तरह देखते हुए, भाई कल ही तो दोपहर से पासबुक प्रिंटर खराब हुआ है उससे पहले तो सबकी किताब छप रही थी.

ग्राहक – साहब, हमें कल से क्या मतलब है, मै तो जब भी आता हूँ आपकी मशीन खराब ही रहती है. कुछ करते क्यों नहीं हो ?

ब्रांच मेनेजर : ठीक है भाई, शिकायत बड़े साहब को लिखवा दी है जल्दी ही मशीन ठीक हो जाएगी.

क्योकि साहब, भारत के किसी भी गाँव ,शहर, बड़े से बड़ा शहर में अगर आपकी ब्रांच की पासबुक प्रिंटर साल के 365 दिन सही ढंग से काम करता है तो आप शायद उन सौभाग्यशाली शाखा प्रबंधको में से एक होंगे जो इस धरती पर अभी जन्म नहीं लिया है ,यकीन मानिए पासबुक प्रिंट कराने के बाद ग्राहक के चेहरे पर जो मुस्कान आती है, वो तो उससे भी कही ज्यादा होती है जब आप बैंक में नौकरी लगने के बाद अपनी शादी के लिए पहली बार लड़की देखने गये होंगे .

परिदृश्य 2 -पासबुक प्रिंटर के नाम पर एक घटना आपको सुनाता हू जो मेरे साथ हुई थी. एक सज्जन दो या तिन दिन पर बैंक में आते थे काफी पढ़े -लिखे थे. आकर केवल अपनी पासबुक प्रिंट करवाते थे और चले जाते थे जिस दिन पासबुक प्रिंट हो जाती थी उस दिन तो पासबुक को ही अपनी महबूबा की तरह देखते हुए ब्रांच से बाहर निकल जाते थे और जिस दिन पासबुक प्रिंट नहीं हुई उस दिन यकीन मानिए पूरे ब्रांच के स्टाफ को सौतन की तरह घूरते हुए ब्रांच से निकल जाते थे. एक दिन हमसे रहा नहीं गया मैंने उनको अपने पास बुलाया बोला श्रीमान अपना मोबाइल दीजिये मै आपकी पासबुक अभी मोबाइल पे डाउन लोड कर देता हूँ. फिर आपको ब्रांच आने की जरुरत नहीं होगी आप अपना डिटेल्स अपने मोबाइल पर देख लेना. अंकल ख़ुशी – ख़ुशी डिजिटल होकर ब्रांच से चले गये लेकिन ये क्या अगले दो तीन दिन के बाद से फिर वही कहानी. पासबुक प्रिंट वाली होने लगी. मैंने फिर उनको अपने पास बुलाया मैंने बोला श्रीमान अब आप पासबुक क्यों प्रिंट करवाने ब्रांच आ जाते है? मैंने तो आपको अपनी बैंक की डिजिटल सुविधा आपके मोबाइल पर उपलब्ध करा दी थी. श्रीमान का जवाब था बेटा जो मजा पुराने में है वो नए में कहाँ अपनी तो नींद पासबुक को देख कर ही आती है .

परिदृश्य 3 -प्रत्येक ब्रांच में एक दो ग्राहक ऐसे होते है की ब्रांच मैनेजर चाहे जों कुछ कर ले, वो ब्रांच की सर्विस से संतुष्ट नहीं हो सकते और उसमें भी जले पर नमक, पासबुक प्रिंटर कर देता है. जब उसमें से एक ग्राहक ब्रांच मेनेजर साहब के पास आकर बैठता है और साहब उनसे पूछते है बताइए कैसे आना हुआ और जवाब आता है कुछ नहीं मैनेजर साहब, सोचा की आपसे बहुत दिनों से

मुलाकात नहीं हुई. चलकर मिल लेता हूँ और काफी दिनों से पासबुक प्रिंट नहीं कराइ है. ये भी काम निपटा लेता हूँ. (जबकि अभी एक सप्ताह पहले ही उनका बेटा पासबुक प्रिंट करा कर ले गया था)

ब्रांच मैनेजर साहब : (काटो तो खून नहीं) प्रधान जी, अब मै क्या कहूँ पासबुक प्रिंटर सुबह से काम कर रहा था लेकिन अभी अभी नेटवर्क चला गया है. जिसके वजह से अभी पासबुक प्रिंट नहीं हो पायेगा .

ग्राहक :- मैनेजर साहब आपके यहाँ सबकुछ सही है, लेकिन आज तक पासबुक प्रिंटर नहीं सही हो पाया बताये कितना इम्पोर्टेन्ट काम था सोचा था की आज पासबुक प्रिंट हो जाती तो सब्सिडी वाला पैसा निकाल लेता.

परिदृश 4 - अजी साहब कभी -कभी ऐसा भी होता है की ब्रांच में पासबुक प्रिंटर काफी दिनों से अपनी सेवा अच्छे ढंग से दे रहा होता है लेकिन तभी एक ग्राहक मेनेजर साहब के पास आता है और बोलता है की साहब आपका प्रिंटर आजकल ठीक ढंग से पासबुक नहीं छापता है , बेचारे साहब पूरा दिन यही सोचने में निकाल देते है है की अब मै प्रिंटर से कैसे बोलू की भाई थोडा ठीक -ठाक प्रिंट किया करो आपके आलावा भी बैंक में कई तरह की शिकायते है जिसका निवारण करना है.

साहब इसके आलावा अनगिनत कहानिया किस्से हैं जो हम आपको आगे भी बताते रहेंगे अभी हम बस एक ही बात बोलेंगे साहब ये तो मन को गुदगुदाने वाली बाते थी लेकिन हकीकत में बैंक की पासबुक एक आम आदमी का अहम हिस्सा होती जिसमे उसकी जिन्दगी की मेहनत की कमाई दिखती जो वो लाख जतन करके रखना चाहता है .

काव्य-कुंज

सुश्री विनीता मीना
लिपिक – चेम्बूर शाखा

सोच .....

ये सोच-सोच का खेल है, जो मिलता नहीं किसी से मेरा मेल है.
क्यू मिलता नहीं जीने का सार मुझे ?
क्यूँ सोच समाज से पार है??
उड़ने को आसमान है, फिर क्यूँ बेड़ियाँ जकड़े मेरे पांव हैं?
ये रात मुझे कटे हैं, क्यूँ धर्म इंसान को बाँटे है??
सबका मालिक एक कहाए, फिर क्यूँ हिन्दू, मुस्लिम लड़ के अपना खून बहाए?
खून दोनों का लाल है, फिर क्यूँ मर्द श्रेष्ठ , ये सबज्का अभीमान है??
लड़कों के जनम पे थाल बजे, क्यूँ बेटी जन्में तो सबको बोझ लगे?
मैं भी दोनों का अंश हूँ, फिर बेटा ही क्यूँ वंशज कहलाए?
दोनों मिलकर मुझे जनम दे, फिर क्यूँ पिता का नाम मेरे पहचान बताए??
क्यूँ औरत चुप्पी में सबको जचती हैं, क्यूँ आवाज मेरी इन्हें चुबती है?
हर मंदिर में पूजतीनारी है, फिर क्यूँ नारियों पे बनती गाली सारी है??
ये सवाल हर बार मेरे सामने फटके हैं, क्यूँ मेरा साँवला रंग सबको खटके हैं?
जब जोड़े उपर रब बनाए तो क्यूँ कुंडली शादी से पहले मिलाए?
दहेज के लिए लोग भटके हैं, क्यूँ पीड़ित फाँसी पे लटके हैं??
क्या जरूरत दो घरों की मुझको, जब दोनों ही मुझे पराया बताए है..
राधा मीरा की प्रेम इन्हें पाक लगे, फिर क्यूँ इश्क मेरा अभिशाप लगे?
क्यूँ प्रीत मेरी कोई दाग लगे?
कई सवालों से जलता मेरा सीना है, क्यूँ मुझे सिर्फ औरों के लिए जीना है?
मन में इतना बोझ भरा, कौन बताए क्या खोटा है क्या खरा?
ये सोच, सोच,
सोच ये मेरी कैद है इसका ना कोई वैद है...

सेन्ट किसान संपर्क मेला

दिनांक 24.09.2021 को वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री जय शंकर प्रसाद जी की अध्यक्षता में वडकुन में वडकुन शाखा, गंजाड शाखा, धुंदलवाडी शाखा तथा कोसबाड हिल शाखा द्वारा सेन्ट किसान संपर्क मेला का आयोजन किया गया.

कहानी

घमंड़ी राजकुमार

एक बार किसी देश में एक घमंडी राजकुमार रहता था. वह दुनिया का सबसे ताकतवर व्यक्ति बनना चाहता था. ऐसे में उसने पड़ोसी देशों पर हमला कर दिया और बहुत अत्याचार किया. शीघ्र ही उसके अत्याचार और निर्दयता के किस्से सारी सुनिया में फैल गये.

यही नहीं, घमंडी राजकुमार ने अपना संगमरमर का पुतला बनवा कर शहर के बीचो-बीच लगवा दिया और यह घोषणा करवा दी, "हर इंसान को इस मूर्ति के आगे सिर झुकाना होगा."

राजकुमार के डर से सभी लोगों ने उसकी बात मान ली. लेकिन एक युवक, राजकुमार से नहीं डरा. उसने मूर्ति के आगे सिर झुकाने से इनकार कर दिया. वह बोला, "हो सकता है कि तुम इस धरती पर सबसे अधिक शक्तिशाली जीव हो, लेकिन तुम भगवान नहीं हो. भगवान ही सबसे बड़ी शक्ति है. इसलिए हम तुम्हारे आगे सिर नहीं झुकाएंगे. युवक की बात सुनकर घमंडी राजकुमार ने फैसला किया कि वह भगवान को भी हरा देगा. उसने अपने मंत्रियों से कहा, " एक ऐसा बड़ा सा जहाज बनाओ, जो आकाश में उड़ सके. उसमें हजारों खिडकियाँ होनी चाहिए, ताकि उनके माध्यम से गोलियाँ चलाई जा सकें."

शीघ्र ही एक बड़ा सा हवाई जहाज बन गया. राजकुमर जहाज के बीच में बैठ गया और सारी बंदूकों का नियंत्रण एक धागे से करने लगा. जब वह धागे को खिंचता, तो सभी बंदूकों से एक साथ गोलियाँ चलती और बंदूकों में फिर से कारतूस भर जाते. उस जहाज से हजारों चीलें बांधी गई थी. ताकि वे बंदूकों की आवाज सुनकर आसमान में उड़ान भर सकें.

शीघ्र ही आकाश में जहाज उड़ने लगा. यह देखकर भगवान ने देवदूतों का एक दल भेजा, ताकि घमडी राजकुमार को सबक सिखाया जा सके. जब देवदूत उस जहाज के पास फुँचे, तो राजकुमार उन पर गोलियाँ चलाने लगा. लेकिन देवदूतों पर उन गोलियों का कोई असर नहीं हुआ.

केवल एक देवदूत को हल्की सी चोट आई और उसके पंख से खून की एक बूँद टपकी. ज्यों ही वह खून जहाज पर गिरा, त्यों ही उसके मस्तूल में एक बड़ा सा छेद हो गया. जहाज इतना भारे हो गया कि वह धडाम से धरती पर गिरकर चकनाचूर हो गया.

जहाज के नष्ट हो जाने के बाद भी किसी तरह राजकुमार की जान बच गई. परंतु तब भी उसने कोई सबक नही ग्रहण किया. उसने हमले की एक अन्य योजना तैयार की. राजकुमार के साथियों ने ठोस इस्पात का जहाज बनाया. उसे हवा में उड़ाने के पूरे प्रबंध किए गए. फिर राजकुमार अपने बलशाली सिपाहियों के साथ जहाज में सवार हो गया.

जब हवाई जहाज आकाश में पहले से भी ज्यादा उँचाई पर पहुँचा, तो भगवान ने उस घमंडी राजकुमार को सबक सिखाने के लिए नन्हें भुनगों का एक दल भेज दिया. उन्हें आता देखकर राजकुमार चिल्लाया कि उसे धातु की चादर से ढक दिया जाए. राजकुमार के सिपाई उसे धातु की चादर से ढक ही रहे थे कि एक भुनगा उसके भीतर घुस गया और उसने उसके शरीर पर कई जगह बुरी तरह काट लिया.

भुनगे के काटने से घमंडी राजकुमार को इतना दर्द हुआ कि वह अपने कपड़े उतार कर हाय-हाय करता हुआ भागा. सिपाही उसे देखकर हँसने लगे. वे बोले, "घमंड़ी राजकुमार सर्व शक्ति शाली भगवान से लड़ने चला था और एक छोटे भुनगे से ही हार मान गया."

इस घटना से घमंडी राजकुमार का घमंड हमेशा के लिए चूर-चूर हो गया. अब वह अच्छा राजकुमार बन गया था.

दिनांक 30.09.2021 पर आधारित

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय : एक नजर कुल शाखाएँ : 39		
महानगरीय 33	अर्द्ध – शहरी 01	ग्रामीण 05

व्यवसाय एक नजर में (रु. करोड़ में)		
चालू जमा 364.21	बचत जमा 3378.82	कासा जमा 3743.03

कुल अग्रिम (रु. करोड़ में)			
रिटेल 1060.79	एमएसएमई 403.39	कृषि 12.07	एनपीए 159.95

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

कतारों से मुक्ति पाइये
डिजिटल बैंकिंग अपनाइये

CHOOSE FREEDOM FROM QUEUES CHOOSE DIGITAL BANKING

इंटरनेट बैंकिंग
INTERNET BANKING

मोबाइल बैंकिंग
यूएसएसडी (एनयूयूपी)
MOBILE BANKING
USSD (NUUP)

सेन्ट यूपीआई
CENT UPI

क्रेडिट / डेबिट / प्रीपेड / एटीएम कार्ड
CREDIT / DEBIT/ PREPAID / ATM CARD

एम-पासबुक पॉस
M-PASSBOOK POS

एनईएफटी / आरटीजीएस
NEFT/RTGS

हो डिजिटल. हो कैशलेस.
GO DIGITAL. GO CASHLESS.